Ques. परिवार को परिभाषित कीजिए। परिवार की मूलभूत विशेषताएँ क्या है।

Ans. परिवार शब्द अंग्रेजी भाषा के फैमली-शब्द का रूपांतर है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के फैमुलस शब्द से हुई है। इसका अर्थ है नौकर। रोमन कानून में फैमुलस शब्द स्वामियों, दासों, नौकरों, व अन्य संबंधित व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता था।

परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है, जहाँ बालक भाषा व्यवहार पद्धति तथा सामाजिक प्रतिमानों के विभिन्न स्वरूपों को सीखता है। परिवार सार्वदेशिक है तथा यह जनजातीय ग्रामीण व नगरीय समुदायों में सभी धर्मों के अनुयायियों तथा सभी संस्कृतियों में पाया जाता है।

परिवार की परिभाषा

(i) मैकाइवर तथा पेज के अनुसार "परिवार वह समूह है जो कि लिंग संबंध पर आधारित है तथा काफी छोटा एवं इतना स्थायी है कि बच्चों की उत्पत्ति और पालन-पोषण की व्यवस्था करने योग्य है।"

(ii) बर्गेस के अनुसार "परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता और उनकी संतानों के बीच पायी जाती है।"

(iii) निमकॉफ के अनुसार "एक परिवार समूह पुरुष स्वामी उसकी स्त्री या स्त्रियों तथा उनके बच्चों को मिलाकर बनता है तथा कभी-कभी एक या अधिक अविवाहित पुरुषों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।"

(iv) ऑगबर्न तथा निमकॉफ के अनुसार "परिवार पति-पत्नी का बच्चों सहित अथवा बिना बच्चों के संघ है अथवा एक स्त्री या पुरुष का अकेले ही बच्चों के साथ वाला संघ है।"

(v) बर्गेस तथा हार्वे लॉक के अनुसार "परिवार को संक्षेप में एक सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके सदस्य रक्त के आधार पर एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।

(vi) बर्गेस तथा लॉक के अनुसार "परिवार उन व्यक्तियों का एक समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के बंधनों से जुड़े हैं, एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं तथा पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र और पुत्री, भाई और बहन अपने-अपने क्रमशः सामाजिक कार्यों तथा पति-पत्नी के रूप में एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं एवं व्यवहार तथा संबंध रखते हैं व एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा उसे बनाए रखते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है, जिसके सदस्यों के बीच साधारणतया आमने-सामने के संबंध पाए जाते हैं। परिवार में आमतौर पर पति-पत्नी उनके अविवाहित बच्चे तथा अन्य सदस्य सम्मिलित होते हैं

लेकिन भारतीय संदर्भ में उपरोक्त परिभाषाएँ परिवार के अर्थ को पूर्णरूपेण स्पष्ट नहीं करती है। भारतीय परिवार एक स्थान में रहने वाले रक्त संबंधियों का समूह मात्र नहीं है। यह रक्त संबंधियों का नातेदारी समूह भी है जिसके सभी सदस्य पारस्परिक अन्तर्क्रिया की भावना से भावनात्मक रूप से बंधे होते हैं। प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री आई० पी० देसाई ने परिवार की अवधारणाओं को समझने के लिए आवास पारस्परिक संबंधों तथा सदस्यों के अधिकारों तथा कर्तव्यों पर विशेष बल दिया है।

अतः परिवार के कुछ महत्वपूर्ण तत्व निम्नलिखित है।

(1) परिवार एक प्राथमिक, मिश्रित तथा दीर्घकालीन समूह है।

(ii) परिवार की संरचना हेतु पति-पत्नी के मध्य स्थायी साहचर्य तथा यौन-संबंधों का होना आवश्यक है।

(iii) परिवार के सदस्यों का निवास स्थान सामान्य होता है।

(iv) परिवार द्वारा बच्चों का प्रजनन तथा लालन-पालन किया जाता है।

(v) परिवार का आकार विस्तृत तथा संकुचित दोनों प्रकार का हो सकता है।

(vi) परिवार के सदस्य सदस्यता अधिकारों तथा संबंधों के द्वारा परस्पर संबद्ध होते हैं।

(vii) गोद लिए बच्चों को भी परिवार का सदस्य स्वीकार किया जाता है।

(vii) परिवार के सदस्यों के समुचित पालन - पोषण हेतु आर्थिक संसाधन आवश्यक होते हैं।

(viii) प्रत्येक परिवार में वंश-नाम निश्चित करने की कोई न कोई व्यवस्था पायी जाती है।

परिवार की मूलभूत विशेषताएँ

(i) सार्वभौमिकता - परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है जो प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है।

(ii) भावनात्मक आधार - परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक रूप से भावनात्मक आधार पर संबद्ध होते हैं। पति-पत्नी तथा उनके बच्चों के बीच अथाह प्रेम तथा संवेदनात्मक संबद्ध पाए जाते हैं।

(iii) सीमित आकार - परिवार के सदस्यों के बीच रक्त संबंध पाए जाते हैं अतः इसका आकार सीमित होता है। आधुनिक युग में परिवार का आकार निरंतर सीमित होता जा रहा है।

(iv) सदस्यों में उत्तरदायित्व की भावना - परिवार एक प्राथमिक समूह है, जिसके सदस्यों के मध्य अनौपचारिक तथा आमने-सामने के संबंध पाए जाते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच त्याग तथा उत्तरदायित्व की आसक्ति भावना पायी जाती है।

(vi) सामाजिक नियंत्रण – परिवार सामाजिक नियंत्रण में एक प्रभावशाली संस्था है। परिवार में लोकरीतियाँ, प्रथाएँ, सामाजिक निषेध तथा संस्कार आदि सामाजिक नियंत्रण के साधन है। व्यक्ति सामाजिक नियंत्रण का प्रथम पाठ परिवार में ही सीखता है।

(vii) स्थायी तथा अस्थायी प्रकृति – एक सामाजिक संस्था के रूप में परिवार स्थायी है। परिवार सदैव अस्तित्व में रहता है, केवल परिवार के सदस्य बदलते रहते है। एक सामाजिक समिति के रूप में परिवार अस्थायी है। पति या पत्नी के निधन से समिति के रूप में परिवार समाप्त हो जाता है।

DR VASANT KUMAR MISHRA
Guest faculty (Part time)
Dept of Sociology
B.A Hons Paper I
Subsidiary Part I.

05/07/2021